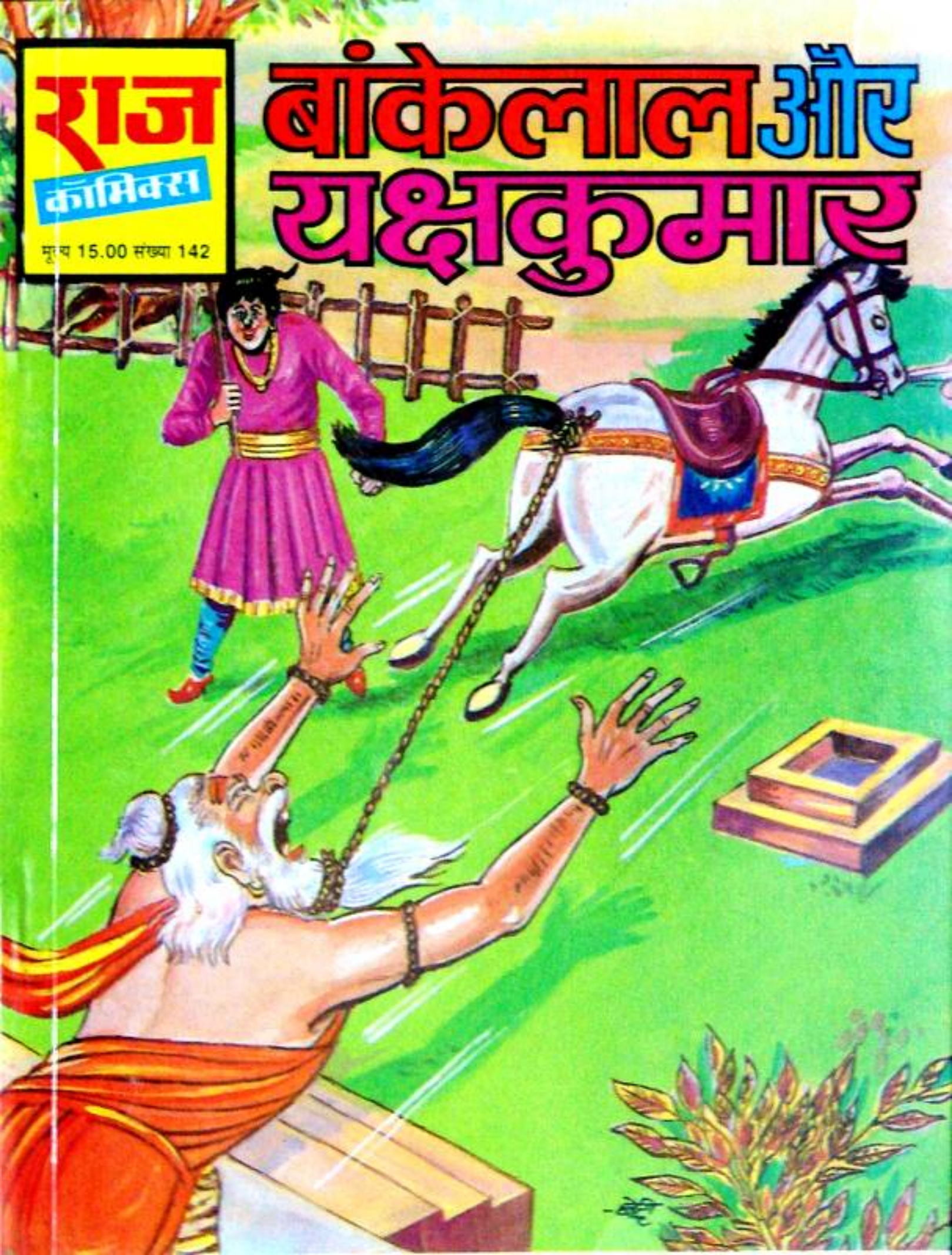

राज
कॉमिक्स
मूल्य 15.00 संख्या 142
बांकेलाल और
यक्षकुमार

बांकेलाल और यक्षकुमार

चित्रांकन : बेदी
कहानी : राजा
संपादन : मनीष चंद्र गुप्त

बांकेलाल का जन्म रामपुर गांव के एक किसान के घर में भगवान शिव के आशीर्वाद से हुआ था। लेकिन बचपन में शिव ने उसकी एक शरारत से क्रोधित होकर उसे आजीवन शरारती बने रहने का श्राप दे दिया था। और जब उसकी मां ने शिव से क्षमा-याचना की तो उन्होंने अपने श्राप में यह परिवर्तन कर दिया कि बांकेलाल शरारत करके किसी को हानि पहुंचाने की कोशिश करेगा तो उस व्यक्ति को बजाए हानि के उल्टा लाभ होगा, और बांकेलाल को भी इससे सम्मान मिलेगा। पिछले दिनों 'राजकोष के लुटेरे' जो आपस में ही लड़मरे थे, उनको मारने का सारा श्रेय बांकेलाल को मिला था, यही कारण था कि आज विशालगढ़ राज्य के आसपास के समस्त राज्यों के राजा बांकेलाल को सम्मानित करने के लिए विशालगढ़ के दरबार में पधारे हुए थे—

...और यही नहीं, सिर्फ इसकी एक चालाकी ने हमारे खिलाफ युद्ध करने आयी मित्र उधमसिंह की विशाल सेना को युद्ध के मैदान से भागने पर मजबूर कर दिया था।
ही-ही-ही। बांकेलाल का वह कारनामा तो मुझे हमेशा याद रहेगा।
सुनकर हैरानी होती है कि अकेले ही एक इन्सान ने इतने-इतने महान व बहादुरी भरे कारनामों को अन्जाम दिया है।

वाकई, बांकेलालजी एक बहादुर व बुद्धिमान इन्सान हैं।
काश! बांकेलाल हमारे राज्य में पैदा होता और हमारे राज्य के लिए अपनी सेवायें प्रदान करता।
हे ईश्वर! तुम्हारी कैसी माया है? हाथ आया हुआ माल तो तुम मुझसे छीन लेते हो, और तरक्की के लिए बेमतलब की तारीफें मेरे हिस्से में डाल देते हो।

फिर बांकेलाल के कारनामों की चर्चा के बाद वहां पर उपस्थित सभी राजाओं ने स्वयं अपने हाथों से बांकेलाल को सम्मानित किया...

...और साथ ही –
ये लीजिए बांकेलालजी, दस हजार स्वर्ण मुद्राएं! उन लुटेरों को जिन्दा या मुर्दा बंदी बनाने पर समस्त राज्यों द्वारा घोषित पुरस्कार!
धन्यवाद राजन!

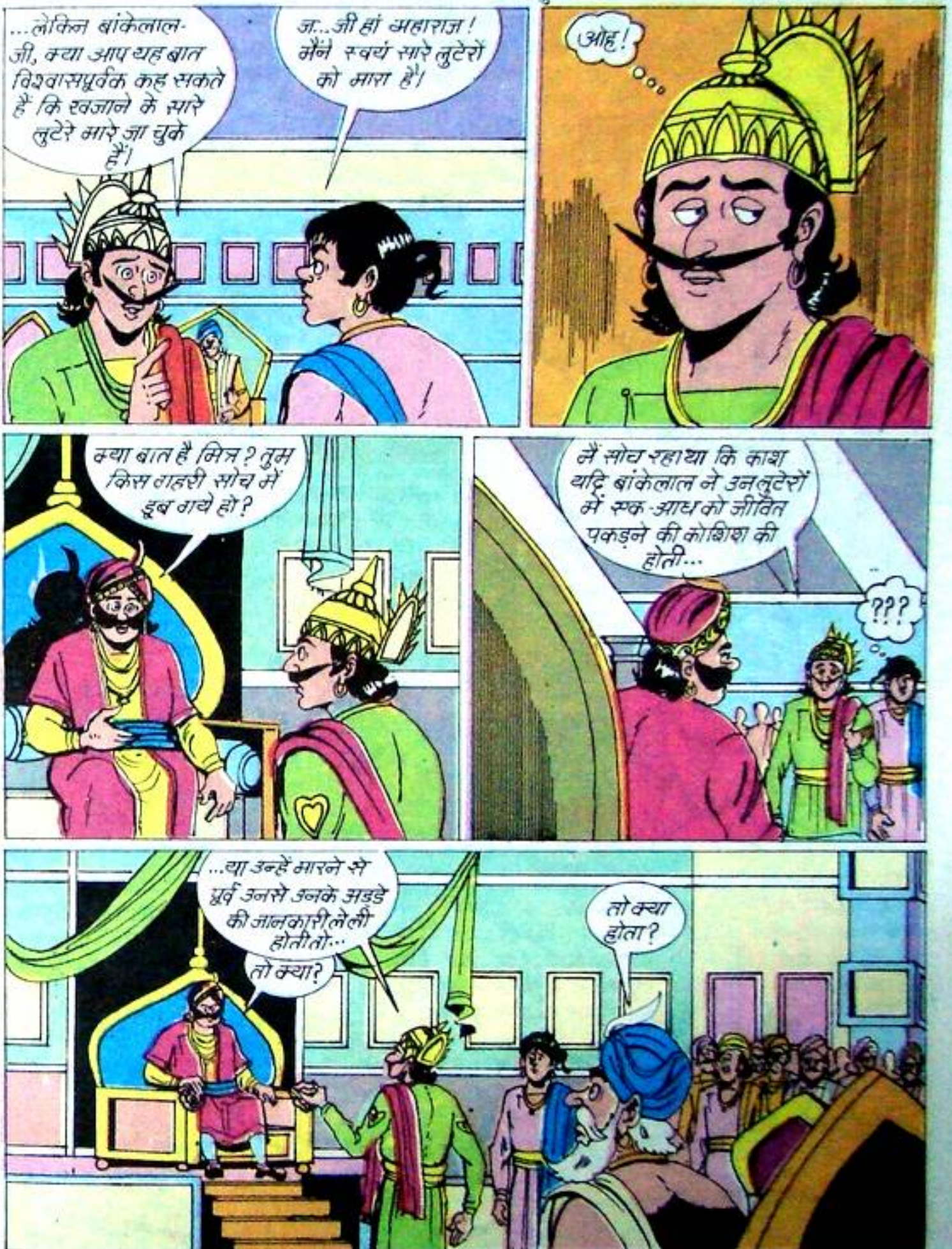
...लेकिन बांकेलाल-जी, क्या आप यह बात विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि खजाने के सारे लुटेरे मारे जा चुके हैं!
ज...जी हां महाराज! मैंने स्वयं सारे लुटेरों को मारा है!
ओह!...
क्या बात है मित्र? तुम किस गहरी सोच में डूब गये हो?
मैं सोच रहा था कि काश यदि बांकेलाल ने उन लुटेरों में एक-आध को जीवित पकड़ने की कोशिश की होती...
???
...या उन्हें मारने से पूर्व उनसे उनके अड्डे की जानकारी ले ली होती तो...
तो क्या?
तो क्या होता?

...तो शायद हम उस खजाने को भी ढूंढ निकालते जो लुटेरे पहले उधमपुर, रूपनगर, शक्तिनगर व अन्य राज्यों से लूट चुके थे।
ओह! बात तो आपकी ठीक ही लगती है, लेकिन अब किया ही क्या जा सकता है?
!!!
!!!
???

हां, अब किया ही क्या जा सकता है? हममें से कोई भी तो उन लुटेरों के अड्डे को जानता नहीं।

मेरे ख्याल से तो हमें अपने-अपने राज्य में ऐसे स्थान की तलाश करनी चाहिए जहां कि उन डाकुओं का अड्डा हो सकता था।
हां, अब सिवाए इसके और कोई रास्ता भी नहीं।
इसी के साथ वह सभा समाप्त हो गयी।

और फिर उस रात बांकेलाल की आंखों में नींद का नामो-निशान नहीं था—
वाह! बांकेलाल, लगता है तेरी किस्मत अभी पूरी तरह सोयी नहीं, क्योंकि अभी डाकुओं के अड्डे में एक विशाल खजाना सुरक्षित है...
...और डाकुओं के उस अड्डे के बारे में सिर्फ तू जानता है। बेशक डाकू तुझे तेरी आंखों पर पट्टी बांधकर ले गए थे, लेकिन चूंकि तू एक बार उनके अड्डे को देख चुका है...

...अतः थोड़ी-सी खोज करने पर तू उनके अड्डे तक पहुंच सकता है और फिर यह करोड़ों का खजाना तेरा होगा...
...और करोड़ों का खजाना हासिल होते ही तेरी हैसियत किसी राजा-महाराजा से कम न होगी।
और यह बात दिमाग में आते ही बांकेलाल की आंखें बुरी तरह चमकने लगीं।
फिर उसने मन ही मन निर्णय लिया-
मैं उस खजाने की खोज अवश्य करूंगा।
और फिर दूसरे दिन सुबह होते ही बांकेलाल राजा विक्रमसिंह के पास पहुंचा—
महाराज की जय हो!
आओ-आओ बांकेलाल कहो, सुबह-सुबह ही हमारे पास आने का क्या कारण है?
महाराज, रात मेरे मन में इच्छा जागी कि मैं देस-परदेस का भ्रमण करूं! सो आप से आज्ञा लेने चला आया।
वाह! यह तो बड़ा ही नेक ख्याल आया तुम्हारे मन में। मैं अभी ही तुम्हारी यात्रा का प्रबन्ध करवाता हूं।

फिर राजा ने तुरन्त ही अपने महामन्त्री को बुलवाया—

महामंत्रीजी! बांकेलाल भ्रमण करना चाहते हैं, अतः इनकी यात्रा का प्रबन्ध राज्य की ओर से किया जाए।

जो आज्ञा महाराज!

और फिर थोड़ी ही देर बाद सफर के लिए कुछ जरूरी सामान के साथ बांकेलाल खजाने की खोज में निकल पड़ा—

वाह! बांकेलाल बन गया तेरा काम, तेरी यह यात्रा सुफल में होगी।

हे प्रभु! जल्दी से मुझे उन डाकुओं के अड्डे तक पहुंचने की राह दिखा दे। खजाना प्राप्त होते ही मैं तेरे मन्दिर में रोज एक लोटा ताजा जल चढ़ाया करूंगा।

बांकेलाल दिन में परदेस के जंगलों की खाक छानता...

...और रात किसी नगर की सराय में गुजारता—

और इसी तरह देस-परदेस भटकते-भटकते एक दिन—

उफ! लगता है आज मैं रास्ता भटक गया हूं। अब मैं क्या करूं? एक तो भूख के मारे जान निकली जा रही है...

...और ऊपर से शाम भी घिर आयी है अगर जल्दी ही इस जंगल से बाहर न निकला तो आज अवश्य ही किसी जंगली जानवर का शिकार बन जाऊंगा।

मन में तरह-तरह की शंकाएं लिए बांकेलाल एक ओर बढ़ ही रहा था कि तभी–

शिव जी ब्याहने चले पालकी सजाए के...

अरे! लोक संगीत! लगता है पास ही कोई बस्ती है जहां से गीत की आवाज आ रही है।

बांकेलाल आवाज वाली दिशा में बढ़ा।

शीघ्र ही–

... अभूति लगाए के हो sss

वाह! तो मेरा अनुमान सच था। अब रात में इसी बस्ती में काटूंगा और यहीं मेरी भूख-प्यास का इन्तजाम भी हो जाएगा।

फिर जब वह बस्ती वालों के बीच पहुंचा तो–

अरे! भाई तुम... लगता है कोई परदेसी हो।

जी हां, मैं एक मुसाफिर हूं और रास्ता भटक जाने के कारण आज आप लोगों के बीच हूं...

ढम ढम

...आप लोगों से उम्मीद करता हूं कि आप लोग मुझे रात यहीं व्यतीत करने की इजाजत देंगे।

अवश्य मुसाफिर! आज इस बस्ती के सारे लोग मिलकर महा शिवरात्रि का उत्सव मना रहे हैं। तुम भी इस उत्सव में शामिल हो जाओ।

आप लोगों के साथ इस खुशी में भाग लेकर मुझे बहुत खुशी होती, किन्तु मैं सफर के कारण काफी थक चुका हूं अतः यदि आप लोग मुझे भोजन...
आदि करा दें तो मैं आराम करूं।
?
!!!
बांकेलाल के मुंह से भोजन शब्द सुनते ही बस्ती वाले एक-दूसरे का मुंह देखने लगे।

क्या बात है भाइयो ? क्या आप लोगों ने कभी भोजन शब्द नहीं सुना या इसका मतलब नहीं जानते ?

यह बात नहीं है मुसाफिर ! दरअसल आज के दिन हम लोग आधीरात तक व्रत रखते हैं और पूरे गांव में आधी रात के बाद ही भोजन इत्यादि के लिए लोगों के घरों में चूल्हा जलता है।..

...उत्सव के बाद खीर का प्रसाद खाने के बाद ही सब लोग भोजन इत्यादि तैयार करने अपने - अपने घरों में जाएंगे।
खीर का प्रसाद !

हां, वो सामने बन रहा है। खीर का प्रसाद !

...हां,तुम चाहो तो तुम्हारे लिए हम गुड़ व पानी का प्रबन्ध करा दें ताकि तुम पानी पीकर आराम कर सको, फिर सुबह भोजन वगैरह का प्रबन्ध भी कर दिया जाएगा।

ठीक है, फिलहाल आप लोग पानी की ही व्यवस्था करा दें!

हां-हां अवश्य! ऐ सुखिया, जा दौड़ कर मेरे घर से गुड़ और पानी ले आ!

जी, मुखिया जी!

फिर गुड़ खाकर पानी पीते-समय बांकेलाल की नजर जैसे ही सामने बन रहे प्रसाद यानी खीर वाले पतीले पर पड़ी तो उसकी खोपड़ी बहक गयी—

तो गांव वाले मुझे गुड़ खिलाकर ही सुला देना चाहते हैं और खुद खीर खाएंगे... पर मेरा नाम...

...भी बांकेलाल है। यदि खीर मैं नहीं खाऊंगा तो फिर कोई नहीं खाएगा। मैं पूरी खीर ही गिरा दूंगा।

और यह बात दिमाग में आते ही बांकेलाल की आंखें शरारत पूर्ण अन्दाज में चमकने लगीं।

फिर पानी-पीने के बाद-

सुखिया, मुसाफिर को मेरे घर ले जा और मेहमानखाने में इनके सोने की व्यवस्था करा देना।

धन्यवाद मुखिया-जी! लेकिन मैं रात आप लोगों के पास यहीं-बिताना चाहता हूं।

लः... लेकिन...

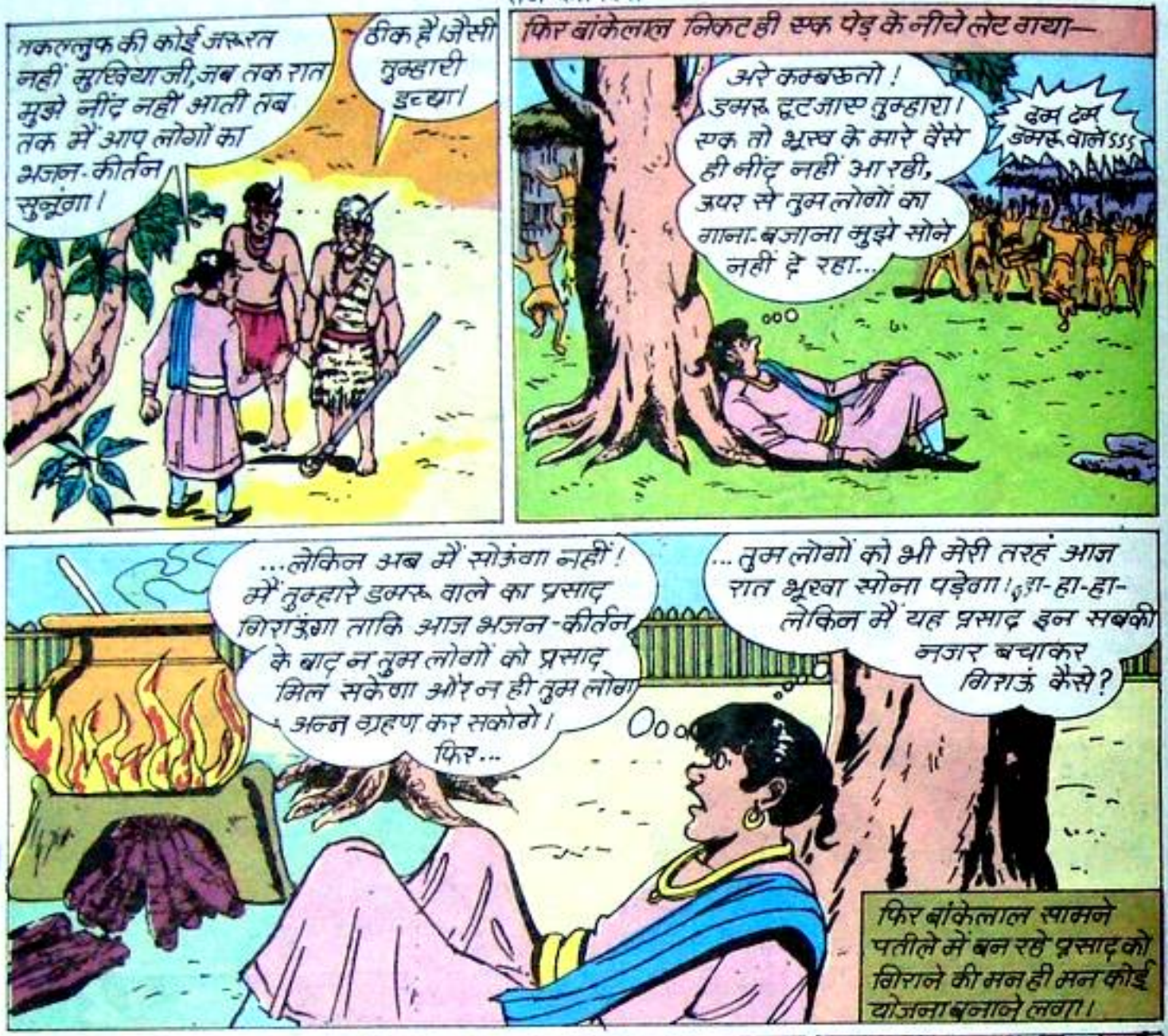

तकल्लुफ की कोई जरूरत नहीं मुखियाजी, जब तक रात मुझे नींद नहीं आती तब तक मैं आप लोगों का भजन-कीर्तन सुनूंगा।
ठीक है। जैसी तुम्हारी इच्छा!
फिर बांकेलाल निकट ही एक पेड़ के नीचे लेट गया—
अरे कम्बख्तो! डमरू टूट जाए तुम्हारा। एक तो भूख के मारे वैसे ही नींद नहीं आ रही, ऊपर से तुम लोगों का गाना-बजाना मुझे सोने नहीं दे रहा...
डम डम डमरू वाले ऽऽऽ
...लेकिन अब मैं सोऊंगा नहीं! मैं तुम्हारे डमरू वाले का प्रसाद गिराऊंगा ताकि आज भजन-कीर्तन के बाद न तुम लोगों को प्रसाद मिल सकेगा और न ही तुम लोग अन्न ग्रहण कर सकोगे। फिर...
...तुम लोगों को भी मेरी तरह आज रात भूखा सोना पड़ेगा। आ-हा-हा- लेकिन मैं यह प्रसाद इन सबकी नजर बचाकर गिराऊं कैसे?
फिर बांकेलाल सामने पतीले में बन रहे प्रसाद को गिराने की मन ही मन कोई योजना बनाने लगा।
और उसी समय जिस पेड़ के नीचे प्रसाद बन रहा था उसी पेड़ की डाल पर—
आहा!
कोबरा। मेरा पुराना दुश्मन। मैं अभी इसके तीन टुकड़े करता हूं।
लेकिन इससे पहले कि सांप का जातीय दुश्मन नेवला सांप पर झपटता कि तभी शायद सांप को अपने पीछे से बढ़ते खतरे का अहसास हुआ—
खतरा

और अपने बचाव के लिए सांप ने निकट ही की डाल पर छलांग लगाई...

...लेकिन जल्दबाजी में वह पास वाली डाल की दूरी का सही अन्दाजा नहीं लगा सका और...

छपाक!

...प्रसाद के पतीले में जा गिरा।

उधर-ठीक इसी समय बांकेलाल की नजर-कुछ ही दूर पर पड़ी लाठी पर पड़ी और फिर--

अभीतक तो किसी की नजर मुझ पर नहीं पड़ी।

लेकिन इससे पहले कि वह लाठी की मदद से प्रसाद वाले पतीले को गिराता कि तभी--

अरे! यह तो मुसाफिर है। पर यह इस तरह रहस्यपूर्ण अन्दाज में यहां क्या कर रहा है?

?

इससे पहले कि वह दोनों कुछ सोच-समझ पाते कि--

अब मैं यहां से भाग चलूं इसी में मेरी भलाई है।

फिर--

तो इसका मतलब दुष्ट ने जानबूझकर भगवान का प्रसाद गिराया है।

फिर इससे पहले कि बांकेलाल वहां से भाग पाता दोनों ने उसे पकड़ लिया-

ठहर दुष्ट ! भागता कहां है ? अपनी इस नीच हरकत की सजा तो लेता जा !

अरे, बाप रे, मारे गयो

तबतक प्रसाद गिरने से परेशान अन्य गांव वालों की नजर भी उन पर पड़ चुकी थी—

यह क्या शम्भू, तुम लोगों ने इसे इस तरह क्यों पकड़ रखा है ?

मुखियाजी, इसी दुष्ट ने जानबूझकर भगवान शिव का प्रसाद गिराया है।

क्यों मुसाफिर, क्या यह नीच हरकत तूने ही की है ?

म...मुखियाजी, म. मुझे स...माफ करें...

स्वामीद्रोही दुष्ट ! तूने भगवान का प्रसाद गिराने का अपराध तो किया ही है, साथ ही तेरी इस गलती के कारण आज सारे गांव को सारी रात भूखा रहना पड़ेगा...

...क्योंकि बिना प्रसाद ग्रहण किये हमारे गांव में आज की रात कोई भोजन नहीं करता ! अतः तुझे इस पाप की सजा अवश्य मिलेगी।

सुखिया, शम्भू ! बांध दो इस दुष्ट को उस पेड़ के नीचे ! आरती के बाद गांव का प्रत्येक इन्सान इसे एक-एक थप्पड़ मारेगा, यही इस नीच की सजा है।

नहींऽऽ

फिर गांव वालों ने बांकेलाल को एक पेड़ के साथ बांध दिया—

बांकेलाल अब तेरी खैर नहीं। आज गांव वालों के एक-एक थप्पड़ की मार से ही तू मर जाएगा।

फिर बांकेलाल की खुली आंखों में आने वाले समय की एक भयानक तस्वीर घूम गयी—

हां, तो भाइयो, सब लोग इसे एक-एक थप्पड़ मारो, यही इस नीच की सजा है।

मारो नीच को।

फिर गांव वाले एक-एक करके बांकेलाल को एक-एक थप्पड़ मारने लगे—

चटाक

फिर थोड़ी ही देर बाद—

अरे! शम्भू तू भी मार इस दुष्ट को।

पर मुखियाजी, यह तो पहले ही मरा हुआ मालूम होता है।

फिर तो इसकी लाश को ठिकाने लगाने का काम हमें ही करना पड़ेगा!

ओह!

नहीं! इस पापी की लाश को ठिकाने लगाने की क्या जरूरत है, ले जाओ इसे और फेंक दो जंगल में ताकि जंगली जानवर इसकी लाश को नोच-नोच कर खा सकें।

फिर थोड़ी ही देर बाद गांव वाले बांकेलाल की लाश जंगल में फेंक कर गांव की ओर चल पड़े।

और गांव वालों के जाते ही कई जानवर बांकेलाल की लाश पर झपटे...

...और अगले पल बांकेलाल के मुंह से एक चीख निकल गई—

नहींऽऽऽ

और फिर घबराकर उसने अपनी आंखें बन्द करलीं और गहरी-गहरी सांसें लेने लगा।

और इधर गांव के कुछ आवारा कुत्ते खीर के प्रसाद को जमीन पर बिखरा देखकर वहां इकट्ठे होने लगे—

अरे! इन कुत्तों को भगाओ वर्ना यह सारा प्रसाद खराब कर देंगे।

रहने दो मुखिया! प्रसाद अब खराब तो हो ही चुका है। अब यह बर्बाद हो इससे अच्छा है इन जानवरों के पेट भरने के ही काम आये।

थोड़ा सा प्रसाद खाते ही कुत्ते जमीन पर गिरकर तड़पने लगे --
?
अरे! इनको क्या हुआ? आओ देखें।
!!!
कूं...कूं...कूं...
क्यांऊ
और अगले ही पल वह सारे के सारे कुत्ते मर चुके थे। और उनकी नीली पड़ती लाश को देखकर गांव वाले फौरन समझ गए --
अरे! यह क्या? प्रसाद खाते ही यह मर गए।
हां, और इनके नीले पड़ते शरीर यह साबित करते हैं कि यह प्रसाद जहरीला था।
त...तो इसका मतलब जो अगर इस प्रसाद को यह मुसाफिर न गिराता तो हो सकता था कि इस प्रसाद को खाकर पूरा का पूरा गांव ही...
हां, उस प्रसाद को खाने के बाद शायद ही हममें से कोई जीवित बचता।

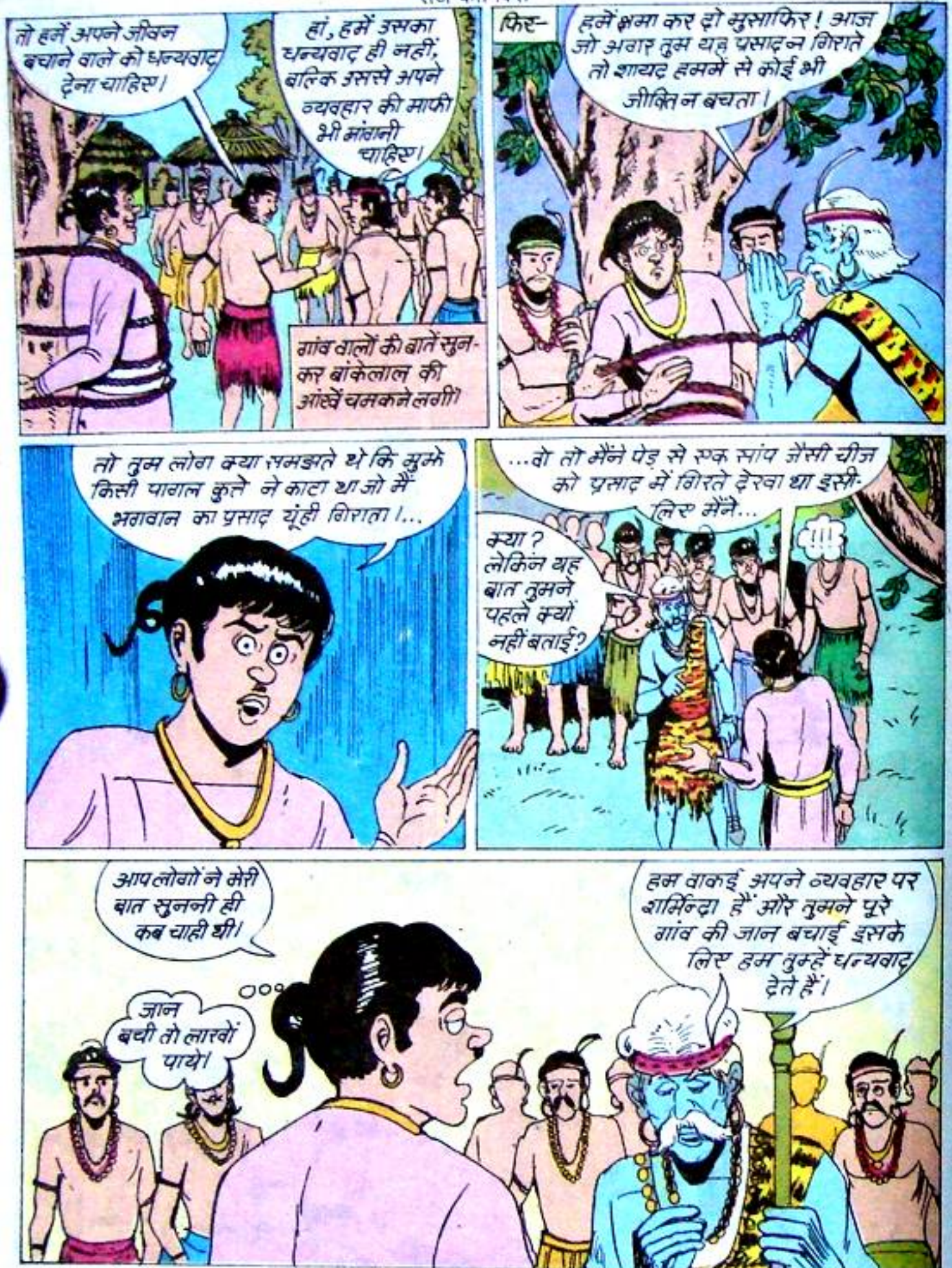
तो हमें अपने जीवन बचाने वाले को धन्यवाद देना चाहिए।
हां, हमें उसका धन्यवाद ही नहीं, बल्कि उससे अपने व्यवहार की माफी भी मांगनी चाहिए।
गांव वालों की बातें सुनकर बांकेलाल की आंखें चमकने लगीं।
फिर-
हमें क्षमा कर दो मुसाफिर! आज जो अगर तुम यह प्रसाद न गिराते तो शायद हममें से कोई भी जीवित न बचता।
तो तुम लोग क्या समझते थे कि मुझे किसी पागल कुत्ते ने काटा था जो मैं भगवान का प्रसाद यूंही गिराता।...
...वो तो मैंने पेड़ से एक सांप जैसी चीज को प्रसाद में गिरते देखा था इसीलिए मैंने...
क्या? लेकिन यह बात तुमने पहले क्यों नहीं बताई?
आप लोगों ने मेरी बात सुननी ही कब चाही थी।
जान बची तो लाखों पाये।
हम वाकई अपने व्यवहार पर शर्मिन्दा हैं और तुमने पूरे गांव की जान बचाई इसके लिए हम तुम्हें धन्यवाद देते हैं।

अरे! मूर्खो, जो अंगार मुझे सच ही पता होता तो मैं यह प्रसाद कभी न खिलाता, बल्कि जब तुम सब लोग यह प्रसाद खाकर मर-खप गये होते तो मैं तुम्हारे पूरे गांव की धन-सम्पति का मालिक होता। पर वाह री मेरी किस्मत?
जी इसमें धन्यवाद की क्या बात है यह तो मेरा मानवीय कर्तव्य था।
वाह! क्या उच्च विचार हैं आपके!
वाकई आप हम सब गांव वालों के लिए देवता बन कर आए हैं।

फिर उस रात गांव वालों ने बांकेलाल की खूब खातिर की—

दूसरे दिन बांकेलाल गांव वालों से विदा लेकर एक बार फिर खजाने की खोज में चल पड़ा—

और उस दिन वह सारा दिन जंगल में खजाने की तलाश में भटकता रहा—
उफ! प्यास के मारे बुरा हाल है, और यहां दूर-दूर तक कोई कुआं या तालाब नजर नहीं आ रहा। हे प्रभु, कहीं खजाने के चक्कर में प्यासा ही न मरना पड़े।

तभी दूर उसे एक झोपड़ी दिखाई पड़ी—
आह! लगता है किसी संन्यासी की झोपड़ी है। अब तो पानी ही नहीं खाने और रात को सोने की भी व्यवस्था यहीं होगी। और हो सकता है कि झोपड़ी में रहने वाला कोई पहुंचा हुआ संन्यासी हो तो शायद मुझे उस खजाने तक पहुंचने की कोई राह ही सुझा दे।

शीघ्र ही—
ओऽम नमः शिवाय
फिर—
ओऽम नमः शिवाय
ओह ! संन्यासी तो साधना में लीन है। मुझे इसका ध्यान भंग होने की प्रतीक्षा करनी चाहिए।
लेकिन काफी देर प्रतीक्षा के बाद भी जब संन्यासी ने आंखें नहीं खोलीं तो बांकेलाल झुंझला उठा—
संन्यासी का क्या ! पता नहीं कब इसकी साधना पूरी होगी ? यहां तो मारे प्यास के दम निकला जा रहा है और इस झोपड़ी में...
...पानी वगैरह का भी इन्तजाम नहीं है। मैं अभी इसका ध्यान भंग करता हूं।
ओम नमः शिवाय।
ऐ संन्या...
बांकेलाल अभी संन्यासी को आवाज लगाने ही जा रहा था...
...कि तभी उसके दिमाग में बिजली की तरह एक विचार कौंधा—
खबरदार बांके ! अगर तूने इसकी साधना में व्यवधान डाला, तो हो सकता है यह क्रोधित होकर तुझे श्राप दे दे, या तू इसके आंखें खोलते ही जलकर भस्म हो जाए।

ओऽम नमः शिवाय
तो फिर मैं क्या करूं? क्या संन्यासी का ध्यान टूटने तक मैं प्रतीक्षा करूं?... लेकिन तब तक तो मैं प्यासा मर जाऊंगा!... फिर...

सोचते-सोचते अचानक उसके दिमाग में एक शरारत ने जन्म लिया और उसकी आंखें चमकने लगीं -
वो मारा पापड़ वाले को।

अगले ही पल उसने झोपड़ी की एक खूंटी पर टंगी डोरी उतारी...

...और उसके एक छोर से संन्यासी की दाढ़ी बांधी...

...और दूसरे छोर को उसने अपने घोड़े से बांध दिया...

फिर घोड़े को पेड़ से खोलकर बांकेलाल ने उसे जोर से एक डंडा मारा—
हिन...हिन

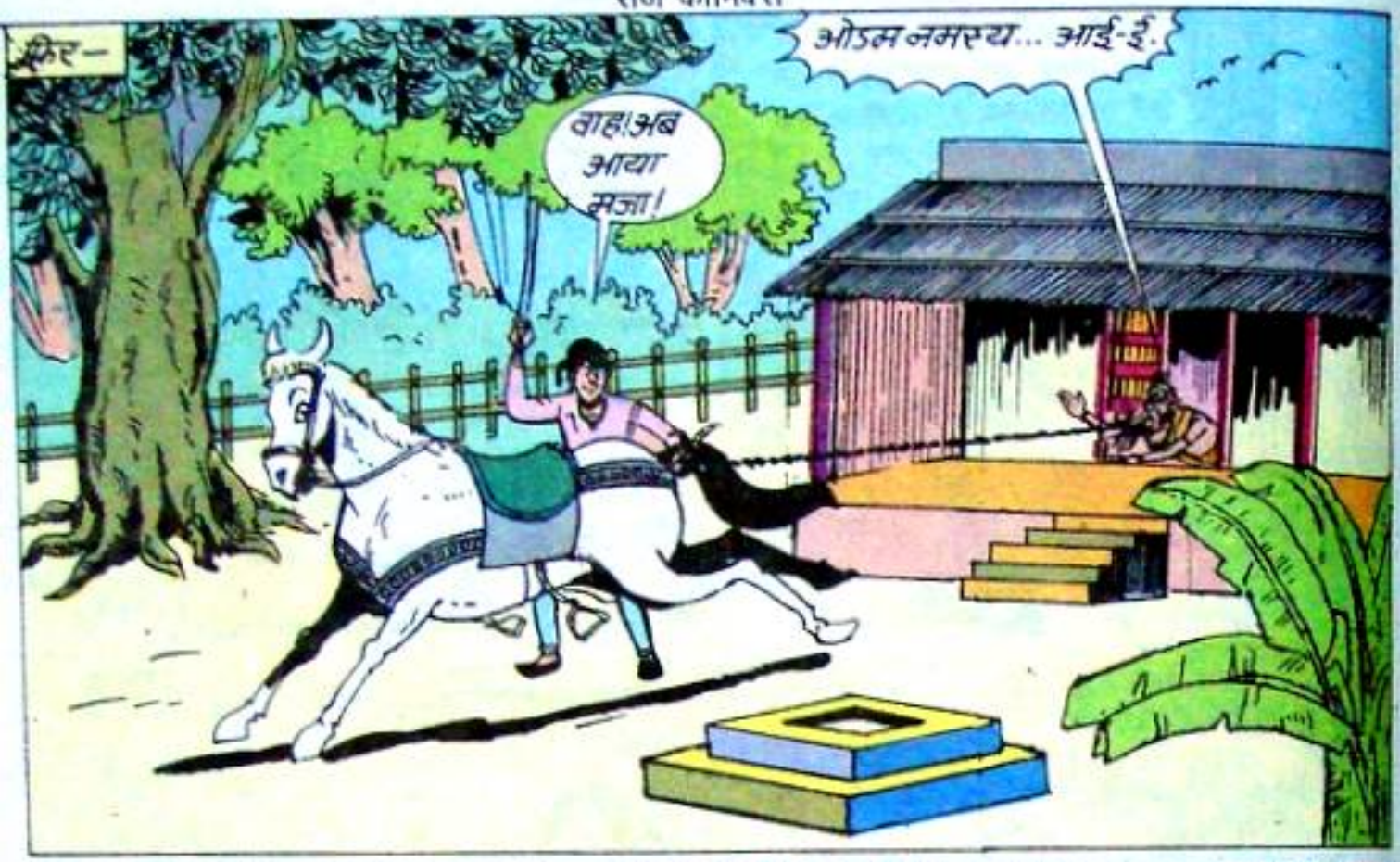

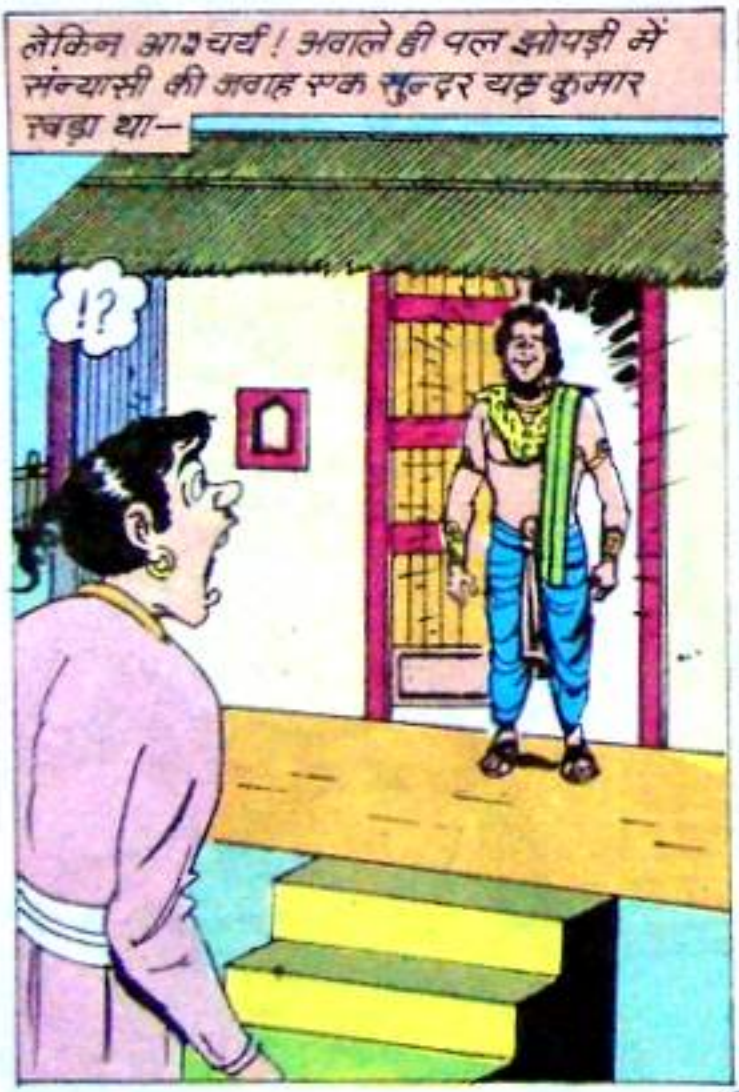

फिर—
ओऽम नमस्य... आई-ई.
वाह! अब आया मज़ा!
लेकिन आश्चर्य! अगले ही पल झोंपड़ी में संन्यासी की जगह एक सुन्दर यक्ष कुमार खड़ा था—
!?
हैरान होने की ज़रूरत नहीं है शरारती बांकेलाल! तुम्हारी इस शरारत के कारण आज वर्षों बाद मुझे श्राप से मुक्ति मिली है।
अरे! यह तो मेरा नाम भी जानता है!

कैसा श्राप ? और तुम मेरा नाम कैसे जानते हो ??
यह एक बहुत लम्बी कहानी है, मैं यज्ञराज का पुत्र अपने बचपन में बहुत शरारती हुआ करता था....

...एक दिन...
आहा! भोले बाबा! लगता है भंग की तरंग में सोये पड़े हैं। मैं अभी इनकी भंग उतारता हूं।

...अगले ही पल मुझे एक शरारत सूझी और मैंने भोले बाबा की जटा को उनके पास ही सोये उनके नन्दी की पूंछ से बांध दिया...

...फिर नन्दी को जोर से एक चुटकी काटी तो...
उफ!
ओऽऽ

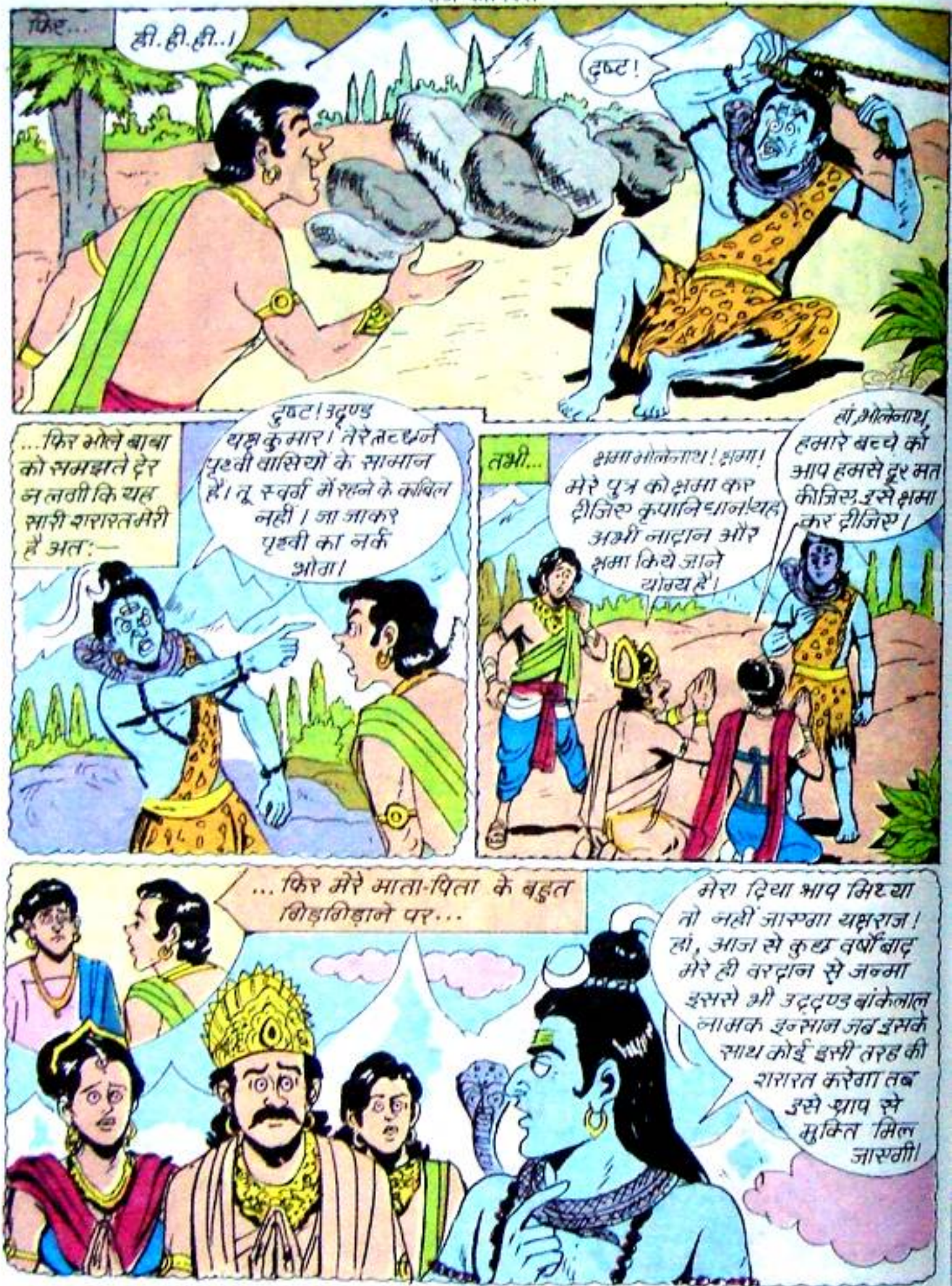
फिर...
ही.ही.ही..!
दुष्ट!
...फिर भोले बाबा को समझते देर न लगी कि यह सारी शरारत मेरी है अतः—
दुष्ट! उद्दण्ड यक्ष कुमार! तेरे तत्क्षण पृथ्वी वासियों के समान है। तू स्वर्ग में रहने के काबिल नहीं। जा जाकर पृथ्वी का नर्क भोग।
तभी...
क्षमा भोलेनाथ! क्षमा! मेरे पुत्र को क्षमा कर दीजिए कृपानिधान! यह अभी नादान और क्षमा किये जाने योग्य है।
हां, भोलेनाथ, हमारे बच्चे को आप हमसे दूर मत कीजिए, इसे क्षमा कर दीजिए।
...फिर मेरे माता-पिता के बहुत गिड़गिड़ाने पर...
मेरा दिया श्राप मिथ्या तो नहीं जाएगा यक्षराज! हां, आज से कुछ वर्षों बाद मेरे ही वरदान से जन्मा इससे भी उद्दण्ड बांकेलाल नामक इन्सान जब इसके साथ कोई इसी तरह की शरारत करेगा तब उसे श्राप से मुक्ति मिल जाएगी।

बस उसके बाद मैंने अपने आपको पृथ्वी पर एक मानव के रूप में पाया, और तभी से मैं तुम्हारे आने का इन्तजार करने लगा कि कब तुम आकर मुझे श्राप से मुक्ति दिलाओगे।

ओह!

और हां बांकेलाल। तुमने मुझे श्राप से मुक्ति दिलायी है, इसलिए मैं तुमको अपनी यह अंगूठी देता हूं जब कभी तुम पर भारी मुसीबत आए तो इस अंगूठी को तीन बार रगड़ना...

...मैं तुरन्त तुम्हारी सहायता के लिए पहुंच जाऊंगा। अच्छा अब मैं चलता हूं। विदा मेरे दोस्त!

आने से पहले मुझे पानी तो पिलाते जाओ मेरे भाई।

क्षमा मित्र, इस समय मैं तुम्हारी यह सहायता भी नहीं कर सकता, क्योंकि मैं तुरन्त अपने वर्षों से बिछड़े माता-पिता से मिलना चाहता हूं। हां, इस झोपड़ी के पीछे एक झील है, तुम वहां जाकर अपनी प्यास बुझा सकते हो।

इतना कहने के साथ ही यक्षकुमार विलुप्त हो गया।

दुंह कृतघ्न कहीं का! ...चलो जाते-जाते सोने की अंगूठी तो दे गया।

बांकेलाल ने यक्षकुमार की दी अंगूठी अपनी उंगली में पहन ली।

फिर झील पर पहुंचकर बांकेलाल ने झील का पानी पिया...

...और एक बार फिर खजाने की खोज में चल पड़ा।

फिर कई दिनों की खोज के बाद अन्त में—
आहा ! आखिर मेरी खोज सफल हुई, उन सामने वाले खण्डहरों में ही उन डाकुओं का अड्डा था। और उन डाकुओं ने कई राज्यों का लूटा खजाना यहीं कहीं छुपाया होगा।...
...और अब वह सारा खजाना मेरा होगा। हा-हा-हा।
फिर बांकेलाल ने उन खण्डहरों का कोना-कोना छान मारा, लेकिन उसे खजाना नहीं मिला—
उफ! पता नहीं उन डाकुओं ने खजाना कहां छुपा रखा था। कहीं मेरी सारी मेहनत बेकार तो नहीं चली जाएगी?
और झुंझलाए हुए बांकेलाल की नजर जैसे ही एक मूर्ति पर पड़ी तो—
यह क्या ? क्या काली मैया मेरी असफलता पर मुझे जीभ दिखा रही है। मैं अभी इनकी जीभ को खींचकर उखाड़ दूंगा।

फिर आगे बढ़कर बांकेलाल ने जैसे ही प्रतिमा की लटकती लाल-लाल जीभ को पकड़ कर खींचा—

अर्र ई-ई!

अगले ही पल जहां बांकेलाल खड़ा था वहां का फर्श एकाएक गायब हो गया और—

आ ई-ई

फिर—

फुस्स

फुस्स

फुस्स

धप

तहखाने का दृश्य देखते ही बांकेलाल के मुंह से एक चीख निकली—

नहीं

और इधर अपने शिकार को तहखाने में देखकर एक साथ कई सांप बांकेलाल की ओर बढ़े—

उफ! ऐसा नहीं हो सकता। मैं ऐसी बेबसी अरी मौत नहीं मर सकता। हे प्रभु मेरी रक्षा करो।

मारे भय के पीछे हटता बांकेलाल परेशानी के आलम में हाथ मलने लगा—
हाथ मलते-मलते अनजाने में ही यक्षकुमार की दी हुई अंगूठी तीन बार रगड़ गयी और अगले ही पल—
हा-हा-हा! लगता है किसी नई शरारत ने तुम्हें इस मुसीबत में फंसा दिया है बांकेलाल।
मुझे बचा लो यक्षकुमार! क्यों यह...
घबराओ मत बांकेलाल, तुम्हें कुछ नहीं होगा।
कहने के साथ ही यक्षकुमार ने अपना मुख खोल दिया...
...अगले ही पल यक्षकुमार के मुंह से सैकड़ों नेवले निकले।
?

और देखते ही देखते नेवलों ने सांपों के कई-कई टुकड़े कर डाले—
फों-फों
फिर यक्षकुमार ने अपना हाथ हवा में लहराया तो उसके हाथ में एक तलवार आ गयी—
बचो यक्षकुमार।
फों-फों
और अगले ही पल—
स्वाक्
फिर सांपों और अजगरों के मरते ही बांकेलाल धड़ाके लगाता हुआ सामने पड़ी विशाल धन सम्पदा की ओर बढ़ा—
हा-हा-हा। अब इस खजाने का मालिक मैं हूं। हा-हा-हा।
हा-हा-हा।
अच्छा बांकेलाल, अब मैं चलता हूं।
ऐं-हां!...पर यक्षकुमार तुम मुझे और इस खजाने को ऊपर तक तो पहुंचा दो।
ठीक है, तुम मेरे कंधे पर बैठ जाओ।

लेकिन यह खजाना...
तुम इसकी चिन्ता मत करो। मैं इसे भी ऊपर पहुंचा दूंगा।

फिर अगले ही पल—

फिर—
!?

अच्छा बांकेलाल, अब तुम इजाजत दो। मैं चलता हूं।
लेकिन यह खजाना... मैं इसे यहां से लेकर कैसे जाऊंगा? भाई, इसे किसी सुरक्षित स्थान तक पहुंचवाने में मेरी मदद करो।

लेकिन इसे पहुंचाना कहां है?
कहीं भी किसी भी सुरक्षित स्थान तक।

बांकेलाल की बात सुनते ही यक्षकुमार पहली बार चौंका—
!?

फिर वह सोचने लगा–

इतना सारा धन भला किसका हो सकता है? और यह बांकेलाल के हाथ कैसे और क्यों लगा?

अगले ही पल यक्षकुमार ने अपनी आंखें बन्द करली और फिर शीघ्र ही सारी कहानी उसकी बन्द आंखों के सामने घूम गयीं।

ओह! तो यह डाकुओं द्वारा लूटा गया धन है जिसे बांकेलाल हड़पना चाहता है,लेकिन भगवान शिव के श्राप सुधार के अनुसार तो यह धन जिसका है उन्हें बांकेलाल के द्वारा ही वापस मिलना चाहिए...लेकिन बांकेलाल की तो नीयत खराब है फिर...

फिर बाहर आकर यक्षकुमार ने अपना दाहिना हाथ हवा में लहराया और अगले ही पल उनके पास लकड़ी की गाड़ी खड़ी थी। यक्ष कुमार के दुबारा हाथ घुमाते ही सारा धन अपने आप गाड़ी में लद गया।

देखो बांकेलाल, इसको खींचने के लिए मैं स्वयं बैल का रूप धारण करता हूं।

फिर किसी बात के दिमाग में आते ही यक्षकुमार की आंखें शरारतपूर्ण ढंग से चमकने लगीं–

क्या सोचने लगे यक्षकुमार?

मैं सोच रहा था कि मुझे तुम्हारी मदद करनी ही चाहिए। आओ मेरे साथ बाहर चलो।

बैल का रूप धारण करके यक्ष कुमार गाड़ी को खींचता हुआ वहां से चल पड़ा–

वाह! मजा आ गया! अब इस विशाल खजाने का अकेला मैं मालिक हूं। अब मेरी हैसियत राजा विक्रमसिंह से कम नहीं।

फिर विशाल गढ़ राज्य की सीमा के अन्दर पहुंचकर बांकेलाल ने जैसे ही बैलगाड़ी को अपने गांव की ओर मोड़ना चाहा तो बैल रूपी यक्षकुमार अचानक ही नगर की ओर मुड़कर भागने लगा—

अ...रे...रे यह क्या यक्षकुमार... तुम किधर जा रहे हो?

जहां मुझे जाना चाहिए बांकेलाल!

क्या मतलब? कहीं तुम पागल तो नहीं हो गये।

तुम शायद ठीक समझ रहे हो। मैं वाकई पागल हो चुका हूं।

कुछ देर बाद—

अरे! इस बैलगाड़ी को रोको वर्ना यह भरे दरबार में पहुंच जायेगी और फिर महाराज हमें कठोर दण्ड देंगे।

?

!?

लेकिन इससे पहले कि पहरेदार बैलगाड़ी को रोक पाते बैलगाड़ी राजा विक्रमसिंह के लगे हुए दरबार में पहुंच गयी—

अरे! बांकेलाल तुम? यह सब क्या है?

मारे गये!

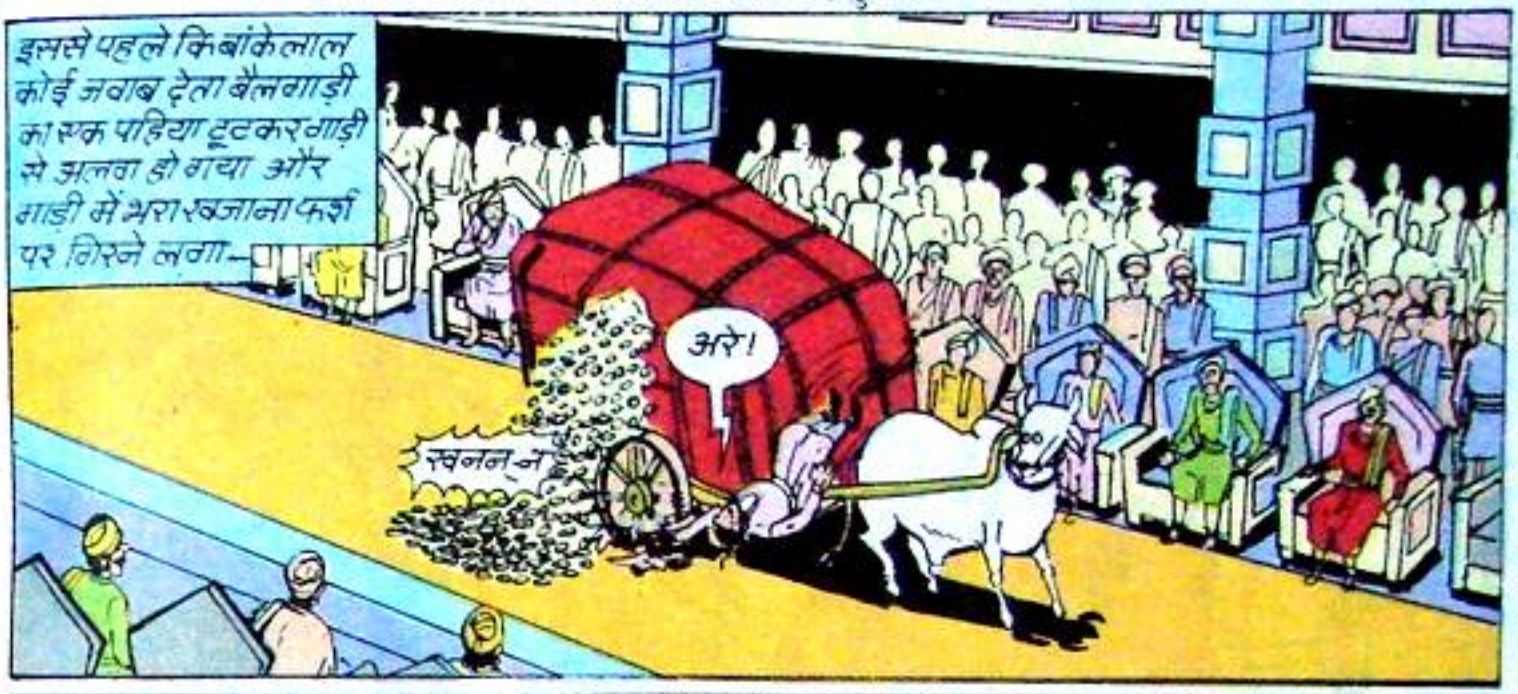

इससे पहले कि बांकेलाल कोई जवाब देता बैलगाड़ी का एक पहिया टूटकर गाड़ी से अलग हो गया और गाड़ी में भरा खजाना फर्श पर गिरने लगा—
अरे!
खनन-न
फिर आश्चर्यचकित से राजा और दरबारी राजदरबार में बिखरे धन को देखने लगे—
!!!
?!?
बांकेलाल, कहीं यह सारा धन कई राज्यों का लूटा हुआ वही धन तो नहीं जिसे डाकू सुल्तानसिंह और उसके साथी लूट ले गये थे? और...??
ज-जी महाराज, यह वही धन है।
तो इसका मतलब तुम भ्रमण पर नहीं, बल्कि इसी धन की खोज में गये थे।
ज... जी।
वाकई बांकेलाल तुमने विशालगढ़ राज्य में जन्म लेकर न केवल हम पर उपकार किया है, बल्कि तुम्हारे ही कारण इस राज्य की इज्जत और गौरव को चार चांद लगे हैं।

हां, बांकेलाल, तुमने अकेले ही इस धन को खोजकर यह सिद्ध कर दिया है कि तुम केवल बुद्धिमान और बहादुर ही नहीं पक्के देश भक्त भी हो!
अरे! मूर्खों, अगर इस यक्ष के बच्चे ने मेरे साथ विश्वास-घात न किया होता तो यह सारा धन मेरा होता।
वाकई बांकेलाल, तुम्हारी जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है।
बांकेलाल लुटे हुए मुसाफिर की तरह अपनी प्रशंसा सुन रहा था।
तभी बैल रूपी यक्षकुमार उसके कान में फुसफुसाया—
देखा बांकेलाल, चारों ओर तुम्हारी ही प्रशंसा हो रही है। अब तो खुश हो जाओ।
यक्ष के बच्चे! काश मैंने तेरी दाढ़ी न नोची होती तो आज इस खजाने का मालिक अकेला मैं होता।
और बांकेलाल की इस फुसफुसाहट पर बैल रूपी यक्षकुमार मुस्कराया और फिर एकाएक गायब हो गया। और दरबार में बांकेलाल के अलावा किसी का भी ध्यान उस पर न गया।
फिर दो दिनों बाद एक बार फिर कई राजाओं के राजा विशालगढ़ पहुंचे और उन्होंने बांकेलाल को अपने हाथों से सम्मानित किया और उसे पुरस्कार स्वरूप पांच हजार स्वर्ण मुद्राएं दीं।

समाप्त